ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-21-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

- कहते आते थे यही सभी नरदेही,
  "माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।"
  अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,-
  "है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।"
  बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,
  दृढ़ हृदय ने देखा, मृदुल गात ही देखा।
  परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
  इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा।

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी-
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'

शब्दार्थ नरदेही-मानव तन धारण करने वाला, मनुष्य; कमाता -बुरी माता; । कुपुत्र -बुरा पुत्र; विधाता -ईश्वर; बाहा-मात्र -बाहरी दल -स्थिर, कठोर; मृदुल -कोमल;गात्र -गात, शरीर परमार्थ-दूसरों का हित साधा -पूरा किया; अभागिन -भाग्यहीना

प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी स्वयं को धिक्कारते हुए भरत के हृदय को न समझ पाने की असमर्थता को व्यक्त कर रही हैं।

आत्मग्लानि में डूबी हुई कैकेयी कहती हैं कि अभी तक तो मानव जाति में यही कहावत प्रचलित थी कि पुत्र, कुपुत्र भले ही हो जाए, माता कभी कुमाता नहीं होती अर्थात् पुत्र माता के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने में चाहे कितनी भी लापरवाही क्यों न दिखाए, उनके प्रति कितना भी अपराध क्यों न करे, माता उसे क्षमा करके उसके प्रति अपना उत्तरदायित्व सदा निभाती ही रहती है, किन्तु अब तो सभी लोग यह कहेंगे कि विधाता के बनाए नियमों के विरुद्ध यहाँ पुत्र तो पु त्र ही है, माता ही कुमाता हो गई है अर्थात् संसार मुझ पर बुरी माता होने का आरोप लगाएगा. क्योंकि मैंने पुत्र के हित के विरुद्ध कार्य किया है।

क्रमशः

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे के अर्थ को लिखें एवं याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'